पाठ 24

1. इब्राहीम की पत्नी सारा के मरने के बाद, इब्राहीम ने अपने पुत्र इसहाक को सांत्वना देने के लिए क्या किया?

-इब्राहीम को अपने बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी मिली।

2. इसहाक की पत्नी का क्या नाम था?

-रिबका।

3. रिबका के जुड़वा बच्चों के जन्म से पहले ही परमेश्वर को उनके बारे में सब कुछ कैसे पता चला?

-परमेश्वर सभी लोगों के बारे में सब कुछ जानता है।

-परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं है।

4. रिबका ने जिन जुड़वां लड़कों को जन्म दिया, उनके नाम क्या थे?

-एसाव और याकूब।

5. क्या एसाव ईश्वर में विश्वास करता था?

-नहीं।

6. क्या याकूब परमेश्वर में विश्वास करता था?

-हां।

7. परमेश्वर ने याकूब के वंश के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का चुनाव क्यों किया?

-क्योंकि एसाव ईश्वर में विश्वास नहीं करता था।

8. याकूब ने स्वप्न में क्या देखा जो परमेश्वर ने उसे दिया था?

-याकुब ने एक सीढ़ी देखी।

9. सीढ़ी का निचला सिरा कहाँ छू रहा था?

- सीढ़ी का निचला सिरा धरती को छू रहा था।

10. सीढ़ी का ऊपरी सिरा कहाँ पहुँच रहा था?

- सीढ़ी का ऊपरी सिरा स्वर्ग में पहुंच गया।

11. इसका क्या मतलब था कि सीढ़ी पृथ्वी को छू रही थी और स्वर्ग में पहुंच रही थी?

-सीढ़ी धरती और स्वर्ग को एक साथ ला रही थी।

12. परमेश्वर ने याकूब को यह स्वप्न क्यों दिया?

-परमेश्वर याकूब को आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में सिखा रहे थे।

13. परमेश्वर याकूब को उद्धारकर्ता के बारे में क्या सिखा रहा था?

-जैसे सीढ़ी पृथ्वी और स्वर्ग को एक साथ ला रही थी, वैसे ही परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजेगा जो लोगों को पृथ्वी पर और परमेश्वर को स्वर्ग में एक साथ लाएगा।

14. परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को क्यों नहीं भूल सकता?

-क्योंकि परमेश्वर भूल नहीं सकते।

-क्योंकि परमेश्वर बदल नहीं सकते।

-क्योंकि परमेश्वर हमेशा अपने वादों को निभाते हैं।

15. याकूब के हारान में कई वर्ष रहने के बाद, परमेश्वर ने उसे क्या करने के लिए कहा?

-परमेश्वर ने याकूब से कहा कि वह हारान को छोड़कर कनान देश में लौट जाए।

- याकूब की रक्षा किसने की और उसे सुरक्षित रूप से हारान देश से कनान देश में वापस लाया?

-परमेश्वर।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:1

1-याकूब उस देश में रहता था, जहां उसका पिता रहता था, अर्थात कनान देश।

-नया नाम क्या था जो परमेश्वर ने याकूब को दिया था?

-इजराइल।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:3

3 और इस्राएल यूसुफ को अपके सब पुत्रोंसे अधिक प्रीति रखता या, क्योंकि वह उसके बुढ़ापे में उत्पन्न हुआ या; और उस ने उसके लिथे एक बहुत ही अलंकृत वस्त्र बनवाया।

-याकूब के कितने बेटे थे?

-बारह।

-याकूब के बारह बेटे थे, लेकिन वह अपने एक बेटे को दूसरों से ज्यादा प्यार करता था।

-उस पुत्र का क्या नाम था जिसे याकूब अपने अन्य पुत्रों से अधिक प्रेम करता था?

-जोसेफ।

-क्योंकि याकूब यूसुफ से अधिक प्रेम करता था, उसने यूसुफ के लिए एक बहुत ही अलंकृत वस्त्र बनवाया।

-क्योंकि याकूब अपने अन्य पुत्रों से अधिक यूसुफ से प्रेम करता था, यूसुफ के भाई यूसुफ के बारे में क्या सोचते थे?

-वे यूसुफ से जलते थे, और उस से बैर रखते थे।

-यूसुफ के भाई भी यूसुफ से नफरत करते थे क्योंकि यूसुफ अपने पिता को बताता था कि उसके भाइयों ने कुछ गलत किया है।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:2 और 4

2 और यूसुफ नाम सत्रह वर्ष का जवान अपके भाइयोंके संग भेड़-बकरियोंकी चरवाही करता या, और बिल्हा की सन्तान और जिल्पा की सन्तान अपके पिता की पत्नियोंके साथ भेड़-बकरी चराता या, और वह उनके पिता के पास उनके विषय में बुरा समाचार देता या।

4-जब उसके भाइयों ने देखा कि उनका पिता उन में से किसी से भी अधिक यूसुफ से प्रेम करता है, तो वे उस से बैर करने लगे, और उस से एक प्रकार की बात न कह सके।

-लोगों को दूसरे लोगों पर गुस्सा क्यों आता है?

-लोग दूसरे लोगों से नफरत क्यों करते हैं?

-क्योंकि हर कोई परमेश्वर से अलग पैदा हुआ है।

-क्योंकि हर कोई अपने दिल में पाप लेकर पैदा हुआ है।

-क्योंकि हर कोई शैतान की संतान के रूप में पैदा हुआ है।

-यूसुफ के भाई यूसुफ से नफरत करते थे क्योंकि वे परमेश्वर से अलग पैदा हुए थे।

-यूसुफ के भाई यूसुफ से नफरत करते थे क्योंकि वे अपने दिलों में पाप के साथ पैदा हुए थे।

-यूसुफ के भाई यूसुफ से नफरत करते थे क्योंकि वे शैतान की संतान के रूप में पैदा हुए थे।

-हर कोई परमेश्वर से अलग पैदा हुआ है, और हम खुद को बदल नहीं सकते।

-हर कोई अपने दिलों में पाप के साथ पैदा हुआ है, और हम खुद को नहीं बदल सकते।

-हर कोई शैतान की संतान के रूप में पैदा हुआ है, और हम खुद को बदल नहीं सकते।

-एक दिन, परमेश्वर ने यूसुफ को एक सपना दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:5-8

5 यूसुफ ने एक स्वप्न देखा, और जब उस ने अपके भाइयोंसे उसका वर्णन किया, तो वे उस से और भी बैर करने लगे।

6-उसने उन से कहा, सुनो, मेरा यह स्वप्न सुनो:

7 हम खेत में अन्न के पूले बान्ध रहे थे, कि मेरा पूला अचानक उठकर सीधा खड़ा हो गया, और तेरे पूले मेरे चारों ओर इकट्ठे होकर उसे दण्डवत् किए।

8- उसके भाइयों ने उस से कहा, क्या तू हम पर राज्य करना चाहता है? क्या तुम सच में हम पर हुकूमत करोगे?" और वे उसके स्वप्न और जो कुछ उस ने कहा था, उसके कारण उस से और भी अधिक बैर रखने लगे।

-परमेश्वर ने यूसुफ को क्या स्वप्न दिया था?

-स्वप्न में यूसुफ और उसके भाई एक खेत में अन्न के पूले बाँध रहे थे।

-तब भाइयों के अन्न के पूल यूसुफ के अन्न के पूले को दण्डवत् किए।

-उस स्वप्न के कारण जो परमेश्वर ने यूसुफ को दिया, यूसुफ के भाई उस से और भी अधिक बैर रखने लगे।

-कुछ समय बाद, परमेश्वर ने यूसुफ को दूसरा स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:9-11

9-तब यूसुफ ने एक और स्वप्न देखा, और उसका वर्णन अपके भाइयोंसे किया। "सुनो," उसने कहा, "मैंने एक और सपना देखा, और इस बार सूरज और चाँद और ग्यारह तारे मुझे झुका रहे थे।"

10 जब उसने अपने पिता और भाइयों को बताया, तो उसके पिता ने उसे डांटा और कहा, "यह सपना तुमने क्या देखा था? क्या तेरी माता और मैं और तेरे भाई सचमुच आकर तेरे साम्हने भूमि पर दण्डवत् करेंगे?"

11-उसके भाई उससे ईर्ष्या करते थे, लेकिन उसके पिता ने बात को ध्यान में रखा।

-परमेश्वर ने यूसुफ को दूसरा स्वप्न क्या दिया?

-स्वप्न में सूर्य, चंद्रमा और तारे थे।

-तब, सूर्य, चंद्रमा और ग्यारह सितारों ने यूसुफ को दण्डवत् किया।

-सपने में सूरज कौन था?

-जोसेफ के पिता।

-सपने में चाँद कौन था?

-जोसेफ की मां।

-सपने में ग्यारह सितारे कौन थे?

-यूसुफ के ग्यारह भाई।

-दोनों सपनों का क्या मतलब था?

-एक दिन, परमेश्वर यूसुफ को प्रधान बनाएगा, और यूसुफ का परिवार उसे दण्डवत करेगा।

-जोसफ के भविष्य को कौन जानता था, और उसे अपने सपनों के माध्यम से भविष्य दिखाया?

-परमेश्वर।

-जैसे परमेश्वर यूसुफ के भविष्य को जानता था, वैसे ही परमेश्वर हमारे भविष्य को जानता है।

-परमेश्वर हमारे भविष्य के बारे में कितना जानता है?

-परमेश्वर हमारे सभी भविष्य के बारे में जानता है।

-इन स्वप्नों के कारण जो परमेश्वर ने यूसुफ को दिए थे, यूसुफ के भाई उससे और भी अधिक बैर रखते थे।

-एक दिन यूसुफ अपने भाइयों से मिलने मैदान में गया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:17-20

17 सो यूसुफ अपके भाइयोंके पीछे पीछे चला, और उन्हें दोतान के निकट पाया।

18 परन्तु उसके भाइयों ने उसे दूर से देखा, और उसके पहुंचने से पहिले ही उन्होंने उसे मार डालने की युक्ति की।

19- "यहाँ वह सपने देखने वाला आता है!" उन्होंने एक दूसरे से कहा।

20-“आओ, हम उसे घात करें, और इन हौजों में से किसी एक में फेंक दें, और कहें, कि कोई क्रूर पशु उसे खा गया। फिर हम देखेंगे कि उसके सपनों का क्या होता है।"

-यूसुफ के भाई उससे इतनी नफरत करते थे कि वे उसे मारना चाहते थे।

-लेकिन यूसुफ के सबसे बड़े भाई रूबेन ने यूसुफ को बचाने का फैसला किया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:21-24

21 यह सुनकर रूबेन ने उसे उनके हाथ से छुड़ाना चाहा। "चलो उसकी जान नहीं लेते," उन्होंने कहा।

22- “कोई खून मत बहाओ। उसे इस हौज में इस मरुभूमि में फेंक दो, परन्तु उस पर हाथ न डालना।” रूबेन ने उसे उन से छुड़ाकर उसके पिता के पास ले जाने के लिथे यह बातें कहीं।

23 सो जब यूसुफ अपके भाइयोंके पास आया, तब उन्होंने उसका वस्त्र उतार दिया, अर्थात वह सुन्दर अलंकार जो उस ने पहिनाया था।

24 और उन्होंने उसे ले जाकर हौज में फेंक दिया। अब हौज खाली था; उसमें पानी नहीं था।

-यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ के साथ क्या किया?

-उन्होंने उसका चोगा उतार दिया, और उसे एक सूखे कुएँ में फेंक दिया।

-यूसुफ के भाई रूबेन के चले जाने के बाद, शेष भाइयों ने यूसुफ के साथ क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:25-28

25 जब वे भोजन करने बैठे, तो उन्होंने आंख उठाकर देखा, कि इश्माएलियों का एक कारवां गिलाद से आ रहा है। और उनके ऊंट सुगन्धित, बाम, और गन्धरस से लदे हुए थे, और वे उन्हें मिस्र ले जाने को थे।

26-यहूदा ने अपके भाइयोंसे कहा, यदि हम अपके भाई को मार डालें, और उसका लोहू छिपाएं, तो हमें क्या लाभ होगा?

27 आओ, हम उसे इश्माएलियोंके हाथ बेच दें, और उस पर हाथ न रखें; आख़िरकार वह हमारा भाई, हमारा अपना मांस और खून है।" उसके भाई राजी हो गए।

28 तब जब मिद्यानी व्यापारी आए, तब उसके भाइयोंने यूसुफ को हौज में से खींच लिया, और इश्माएलियोंके हाथ जो उसको मिस्र ले गए, बीस शेकेल चान्दी में बेच दिया।

-यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ को गुलाम व्यापारियों के हाथों बेच दिया।

-दास व्यापारी यूसुफ को कहाँ ले गए?

-मिस्र को।

-रूबेन के लौटने पर भाइयों ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:29-31

29 जब रूबेन ने हौज में लौटकर देखा, कि यूसुफ वहां नहीं है, तब उस ने अपके वस्त्र फाड़े।

30-वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लड़का वहाँ नहीं है! अब मैं कहाँ मुड़ सकता हूँ?”

31 तब उन्होंने यूसुफ का अंगरखा लिया, और एक बकरे को बलि किया, और उस वस्त्र को लोहू में डुबा दिया।

-यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ का चोगा लिया, और एक बकरे को बलि किया, और उस वस्त्र को बकरी के लोहू में डुबा दिया।

-तब यूसुफ के भाई यूसुफ के उस वस्त्र को ले गए जो बकरे के लोहू में डुबाया गया था, अपने पिता याकूब के पास ले गया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 37:32-35

32-यूसुफ के भाई उस अलंकृत वस्त्र को अपने पिता के पास वापस ले गए और कहा, “हमें यह मिला है। इसे जांच कर देखना कि यह तेरे पुत्र का चोगा है या नहीं।”

33-याकूब ने उसे पहिचान लिया और कहा, “यह मेरे पुत्र का चोगा है! किसी क्रूर जानवर ने उसे खा लिया है। यूसुफ निश्चय ही टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है।”

34 तब याकूब ने अपके वस्त्र फाड़े, और टाट पहिने, और अपके पुत्र के लिथे बहुत दिन तक विलाप करता रहा।

35-उसके सब पुत्र-पुत्रियाँ उसको शान्ति देने के लिथे आए, परन्तु उस ने शान्ति न दी। "नहीं," उसने कहा, "शोक में मैं अपने पुत्र के पास कब्र पर जाऊँगा।" इसलिए उसका पिता उसके लिए रोया।

-यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ को गुलाम बनाकर बेच दिया।

-तब यूसुफ के भाइयों ने उनके पिता याकूब को धोखा दिया।

-याकूब ने सोचा कि यूसुफ मर चुका है।

-यूसुफ के भाई यूसुफ से बैर रखते थे।

-यूसुफ के भाइयों की नफरत ने उन्हें यूसुफ को गुलाम के रूप में बेचने के लिए प्रेरित किया।

-यूसुफ के भाइयों की नफरत ने उन्हें अपने पिता को धोखा देने के लिए प्रेरित किया।

-घृणा हमेशा अधिक पाप की ओर ले जाती है।

-क्या जोसेफ मर गया था?

-नहीं।

-यूसुफ कहाँ था?

-यूसुफ मिस्र में था।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 39:1

1-यूसुफ को मिस्र ले जाया गया था। पोतीपर, एक मिस्री जो फिरौन के हाकिमों में से एक था, जो पहरेदारों का प्रधान था, उसे इश्माएलियों से मोल लिया जो उसे वहां ले गए थे।

-दास व्यापारियों ने यूसुफ को दास के रूप में किसको बेच दिया?

-पोतीपर को।

-क्या परमेश्वर ने यूसुफ को छोड़ दिया?

-नहीं।

-परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को कभी नहीं छोड़ेगा जो उस पर विश्वास करता है।

-परमेश्वर हर समय यूसुफ के साथ थे।

-पोतीपर द्वारा यूसुफ को खरीद लेने के बाद यूसुफ का क्या हुआ?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 39:2-6

2 यहोवा यूसुफ के संग रहा, और वह सफल हुआ, और वह अपके मिस्री स्वामी के घर में रहने लगा।

3 जब उसके स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग है, और जो कुछ उसके काम में यहोवा ने उसको सफलता दी है,

4-यूसुफ ने उसकी आँखों में अनुग्रह पाया और वह उसका सेवक बन गया। पोतीपर ने उसको अपके घर का अधिकारी ठहराया, और जो कुछ उसका था, उसको उस ने अपके हाथ में सौंप दिया।

5 जब से उस ने अपके घराने का और अपना सब कुछ अपके हाथ का अधिकारी ठहराया, तब से यहोवा ने यूसुफ के कारण मिस्रियोंके घराने पर आशीष दी है। घर और मैदान में पोतीपर के पास जो कुछ था उस पर यहोवा की आशीष बनी रहती थी।

6 सो उसने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में छोड़ दिया; यूसुफ के पास उसके खाने के सिवा और कुछ न था।

-यद्यपि यूसुफ के भाई यूसुफ से घृणा करते थे, परमेश्वर ने यूसुफ को नहीं छोड़ा।

-यद्यपि यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ को दास के रूप में बेच दिया, परन्तु परमेश्वर ने यूसुफ को नहीं छोड़ा।

-क्योंकि यूसुफ परमेश्वर में विश्वास करता था, परमेश्वर ने यूसुफ को आशीष दी।

-एक दिन, जब पोतीपर चला गया, तो यूसुफ को कुछ हुआ।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 39:6-15

6-यूसुफ सुडौल और सुन्दर था,

7 और थोड़ी देर के बाद उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ पर ध्यान दिया, और कहा, "मेरे साथ सोने के लिए आओ!"

8-किन्तु यूसुफ ने इन्कार कर दिया। उसने उससे कहा, “मेरे स्वामी को घर की किसी बात की चिन्ता नहीं है; वह जो कुछ भी उसका मालिक है उसने मेरी देखभाल के लिए सौंपा है।

9-इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं। मेरे स्वामी ने तेरे सिवा मुझ से कुछ भी नहीं रखा, क्योंकि तू उसकी पत्नी है। फिर मैं ऐसा दुष्ट काम कैसे कर सकता था और परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकता था?”

10 और यद्यपि वह प्रतिदिन यूसुफ से बातें करती थी, तौभी उस ने उसके संग सोने या उसके संग रहने से भी इन्कार किया।

11 एक दिन वह अपके कामोंके लिथे घर में गया, और घर का कोई सेवक भीतर न था।

12-उसने उसे अपने लबादे से पकड़ा और कहा, "मेरे साथ सोने आओ!" परन्तु वह अपना चोगा उसके हाथ में छोड़कर घर से बाहर भाग गया।

13 जब उसने देखा कि वह अपना चोगा उसके हाथ में छोड़ कर घर से भाग गया है,

14-उसने अपने घर के सेवकों को बुलाया। "देखो," उसने उनसे कहा, "यह इब्रानी हमारे लिए खेल बनाने के लिए हमारे पास लाया गया है! वह यहाँ मेरे साथ सोने आया था, लेकिन मैं चिल्लाया।

15 जब उसने मेरी सहायता की पुकार सुनी, तो वह अपना चोगा मेरे पास छोड़ कर घर से बाहर भाग गया।

-यूसुफ को ईश्वर में विश्वास था, इसलिए उसने पोतीपर की पत्नी के साथ सोने से इनकार कर दिया।

-क्योंकि यूसुफ ने उसके साथ सोने से इनकार कर दिया, पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के बारे में झूठ बोला।

-क्या हुआ जब पोतीपर घर आया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 39:16-20

16-उसने अपना चोगा तब तक अपने पास रखा, जब तक उसका स्वामी घर न आ गया।

17-तब उसने उसे यह कहानी सुनाई: "वह इब्रानी दासी जो तू हमारे पास ले आया है, वह मुझ से ठट्ठा करने के लिथे मेरे पास आई है।

18 परन्तु जैसे ही मैं सहायता के लिये चिल्लाई, वह अपना चोगा मेरे पास छोड़ कर घर से बाहर भाग गया।

19 जब उसके स्वामी ने यह कहानी सुनी तो उसकी पत्नी ने उससे कहा, "तेरे दास ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है," वह क्रोध से जल उठा।

20 यूसुफ के स्वामी ने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया, वह स्थान जहां राजा के बन्दी कैद थे।

-जब पोतीपर घर आया, तो उसने अपक्की पत्नी के झूठ की प्रतीति की, और यूसुफ को बन्दीगृह में डाल दिया।

-जब यूसुफ जेल में था, तो क्या परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया?

-नहीं।

-परमेश्वर किसी ऐसे व्यक्ति को कभी नहीं छोड़ेगा जो उस पर विश्वास करता है।

-परमेश्वर हर समय यूसुफ के साथ थे।

-जब यूसुफ जेल में था, तब भी परमेश्वर यूसुफ के साथ था।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 39:20-23

20 परन्तु जब यूसुफ बन्दीगृह में था,

21 यहोवा उसके संग था; उस ने उस पर करूणा की, और कारागार के वार्डन की दृष्टि में उस पर अनुग्रह किया।

22 सो हाकिम ने यूसुफ को बन्दीगृह में बन्दियोंका अधिकारी ठहराया, और जो कुछ वहां किया गया, उसका वह अधिकारी ठहराया गया।

23-जो कुछ यूसुफ के साम्हने रहा, उस पर पहरेदार ने ध्यान न दिया, क्योंकि यहोवा यूसुफ के संग रहा, और जो कुछ उसने किया उस में उसको सफलता दी।

-यद्यपि यूसुफ के भाई उससे घृणा करते थे, फिर भी यूसुफ परमेश्वर में विश्वास करता था।

-यद्यपि यूसुफ के भाइयों ने उसे दास के रूप में बेच दिया था, फिर भी यूसुफ परमेश्वर में विश्वास करता था।

-हालाँकि पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ के बारे में झूठ बोला था, फिर भी यूसुफ ने परमेश्वर पर विश्वास किया।

-भले ही यूसुफ को जेल में डाल दिया गया था, फिर भी यूसुफ ने परमेश्वर में विश्वास किया।

-जेल में जोसेफ की रक्षा किसने की?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर ने यूसुफ की रक्षा क्यों की?

-क्योंकि यूसुफ जानता था कि वह पाप में जन्मा है।

-क्योंकि यूसुफ जानता था कि उसका पाप अनन्त मृत्यु लाता है।

-क्योंकि यूसुफ जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-क्योंकि यूसुफ को विश्वास था कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-क्या आपको लगता है कि परमेश्वर जेल में यूसुफ के बारे में भूल जाएगा?

-नहीं।

-अगले पाठ में, हम इस बारे में पढ़ेंगे कि जेल में परमेश्वर यूसुफ के लिए क्या करता है।